IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रामायण का सुंदरकाण्ड सबसे सुंदर

डॉ० विभा माधवी

खगड़िया

रामायण एक अद्भुत ग्रंथ है। मानव जीवन से संबंधित हर समस्या का इसमें जिक्र भी है और उसका समाधान भी है। मनुष्य जब भी किसी झंझावात या तूफान में फंसता है तो रामायण की शरण में उसका समाधान अवश्य मिलता है। वाल्मीकि जी की दिव्य और निर्मल दृष्टि ने रामायण को अनुपम बना दिया है। राम विचार यज्ञ के आचार्य हैं। वाल्मीकि जी के अनुसार "रामो विग्रहवान् धर्मः" अर्थात राम मूर्तिमान धर्म हैं। सत्य, प्रेम और करुणा ये तीनों ही धर्म के निकट हैं तथा राम में इन तीनों का ही मूर्तिमन्त रूप देखने को मिलता है। ये सारे मूल्य शाश्वत एवं सनातन हैं इसलिए राम और रामायण भी उसी रूप में प्रतिष्ठित हैं। राम और रामायण वर्तमान जगत में नितांत आवश्यक हैं और भविष्य में भी रहेंगे।

"एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति" इस शास्त्र-वचन के प्रमाण स्वरूप वाल्मीकि और तुलसीदास की दृष्टि से रामायण प्रत्येक देश, काल एवं व्यक्ति के लिए व्यवहारिक है। सत्य अभय प्रदान करता है, प्रेम एक दूसरे को प्रीति के सूत्र में बाँधता है और करुणा अहिंसा की प्रतिष्ठापना करती है।

"रामचरितमानस" में तप की महिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है- "तप आधार सब सृष्टि भवानी····"

;रामचरित मानस)

अर्थात् स्वाध्याय एवं चिंतन-मनन एक विशिष्ट तप है।

रामायण अर्थात राम का गतिपथ। "अर्थात् इस पृथ्वी पर जन्म लेने वाले समस्त मानव की व्यथाकथा"। राम उनमें उत्तमोत्तम मानव हैं, उद्दात्त गुणों से भरे हुए।

राम एक आदर्श मानव के रूप में रामायण में अवतरित हुए हैं। राम आदर्श राजा एवं पुत्र के रूप में, भरत, लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न आदर्श भाई के रूप में, सीता पतिव्रता पत्नी के रूप में, उर्मिला त्याग की प्रकट पराकाष्ठा के रूप में, हनुमान एक आदर्श सेवक के रूप में हैं।

हनुमान जब सीता की खोज में लंका जाते हैं तो हर महल में सीता की खोज करते हैं, पर वे उन्हें नहीं पाते हैं। उनका मन शंकाओं के सागर में उतराने लगता है यदि सीता नहीं मिली तो मैं कौन-सा मुंह लेकर वापस जाऊंगा। क्या कहूंगा श्रीराम से? बिना सीता का पता किये सुग्रीव और जामवंत को क्या जवाब दूंगा? वे लंका में हर महल में सीता को ढूंढते हुए आशाओं और निराशाओं के मध्य झूलते रहते हैं। तभी उनकी नजर अशोक वाटिका में बैठी सीता पर पड़ती है। उनकी वेशभूषा और जीर्ण-शीर्ण अवस्था देखकर हनुमान अनुमान लगा लेते हैं कि यही माता सीता हैं। उनकी हालत देखकर उनकी ऑखों मेंअश्रु छलछला जाते हैं। एक ऑख में सीता से मिलने की पुलक थी तो दूसरी में व्याकुलता। अभी तक हनुमान राममय थे, किन्तु सीता के दर्शन होने के बाद सीतामय हो गये। वे सीता से वार्तालाप शुरू करने की योजना ही बना रहे थे कि रावण अपने विजय के अहंकार में गर्वित होता हुआ अशोक वाटिका आया और सीता के समक्ष अपनी प्रणय याचना रख कर उसे स्वीकार करने की धमकी देने लगा। उसने तरह-तरह के प्रलोभन दिए और डराया,धमकाया। रावण सीता को डरा-धमकाकर लौट जाता है। सीता दृढ़ एवं अविचल रहीं।

हनुमान रावण के जाने के बाद सीता से अपनी वार्ता शुरू करता है। यहाँ वाल्मीकि जी की संवाद- योजना देखते ही बनती है। एक ओर सीता को यह भी यकीन दिलाना था कि वह राम का भेजा हुआ दूत है तो दूसरी ओर सीता के निराश और टूटे हुए मन में आशा की किरण प्रस्फुटित करना भी आवश्यक था। वह राम का दूत बन कर आये थे। उनकी जिम्मेदारी बहुत ही महती थी। राम का काम कहीं बिगड़ नहीं जाय, इस बात का उन्हें पूरा ध्यान रखना था। उसने पेड़ पर बैठे-बैठे रामकथा कहना शुरू किया। जब सीता ने नजरें उठा कर उसकी ओर देखा, तब हनुमान ने

कहा -

"अहम् रामस्य सन्देशाद् देवि दूतस्तवागतः।"

वैदेहि कुशली रामः स त्वां कौशलमब्रवीत्।।इ

(वाल्मीकि रामायण, लंका काण्ड- 34·2)

हे देवि! मैं राम का संदेशवाहक हूँ तथा आपके लिए उनका संदेश लेकर आया हूँ। श्रीराम कुशल हैं और उन्होंने आपका समाचार पूछा है।"

सीता का मन संदेह से भर उठता है। वो सोचती हैं कि कहीं ये भी रावण की कोई नयी चाल तो नहीं। वे हनुमान से कहती हैं कि हे वानर श्रेष्ठ! यदि तुम सचमुच ही राम के दूत हो तो तुम्हारा कल्याण हो। रावण के जाने के बाद सीता एकदम हताश हो चुकी थीं। ऐसी स्थिति में जैसे ही उसने राम का नाम सुना, वह आनंद विभोर हो गयीं। घोर अंधकार में दीपक के दर्शन हो जाने जैसी बात थी। सीता का मन हर्षातिरेक से भर उठा।

हनुमान सीता जी को विश्वास दिलाने के लिए रामनाम अंकित मुद्रिका देते हैं और कहते हैं कि अब आप धैर्य धारण करें। आपका दुख अब समाप्त होने को है।

फिर भी सीता को अभी पूर्ण विश्वास नहीं हो रहा था। रावण मायावी है , वह कुछ भी कर सकता है, यह सोच कर सीता को यकीन नहीं हो रहा था। वह तो दूध की जली थीं, अतः छाछ भी फूंक-फूंक कर ही पी रही थीं। सीता यह समझ नहीं पा रही थीं कि आखिर नर वानर का यह तालमेल किस तरह बैठा? तब पवनपुत्र ने सारी घटना विस्तार से सुनाते हुए जनकनंदिनी को विश्वास दिलाया। राम की मुद्रिका पाकर सीता की खुशी की सीमा नहीं रही। उनकी आँखों से आँसू की अविरल धारा बह निकली। राम के हाथों को सुशोभित करनेवाली मुद्रिका को देख कर क्षण भर के लिए सीता को लगा कि उसे राम ही प्राप्त हो गए हैं।

पवनपुत्र विदेहनन्दिनी से कहते हैं कि हे देवि! आप मेरी पीठ पर बैठ जाइए। मैं आपको श्रीराम के चरणों में पहुँचा दूँगा।

"त्वां तु पृष्ठगतां कृत्वा सन्तरिष्यामि सागरम्।

शक्तिरस्ति ही मे वोढुं लंकामपि सरावणाम्।। "ब

(वाल्मीकि रामायण, लंका काण्ड- 37·22)

पवनपुत्र का यह कथन निश्चय ही सीता को ललचाने वाला था; क्योंकि राम के पास पहुँच जाने की लालसा ही उन्हें जीवित रखे हुई थी, परन्तु यहाँ सीता अपने अपरिमित धैर्य एवं शील का परिचय देती हैं। वह पवनपुत्र से कहती हैं कि "रावण के शरीर से मेरे शरीर का जो स्पर्श हुआ, वह जबरन हुआ था। उस समय मैं असमर्थ, अनाथ और विवश थी। अतः हे वत्स, मैं यहीं श्रीराम का इंतजार करती हूँ। यही उनकी मर्यादा के अनुकूल होगा।"

हनुमान को इस बात का बड़ा परितोष था कि उन्होंने सीता का पता लगाकर राम का संदेश पहुँचा दिया है।

पवनपुत्र लंका से जाने से पहले शत्रु की शक्ति और सामर्थ्य का भी पता लगाना चाहते थे। अतः वे जनकनंदिनी से आज्ञा लेकर अशोक वाटिका पहुँचे और वहाँ खूब उपद्रव मचाने लगे। इसकी खबर रावण तक पहुँची। उसने पवनपुत्र को रोकने के लिए अपनी सेना को भेजा। अंत में मेघनाद ने ब्रह्मास्त्र चला कर हनुमान को ब्रह्मपाश में जकड़ लिया। पवनपुत्र स्वयं रावण से मिलना चाहते थे इसलिए आसानी से ब्रह्मपाश में बँध गये। जब पवनपुत्र को रावण के दरबार में ले जाया जा रहा था ,वह रावण से मिलने को आतुर थे। वह उसकी शक्ति को भली भाँति पहचान लेना चाहते थे।

हनुमान बलवान, बुद्धिमान एवं विवेक सम्पन्न होने के साथ कूटनीतिज्ञ भी थे। उन्होंने ऐसी युक्ति का आश्रय लिया, जिससे कि शत्रु की शक्ति का अनुमान हो सके। वे शत्रुसैन्य को छिन्न-भिन्न करके उसकी नैतिक ताकत को खत्म करना चाहते थे। उन्होंने यह भी जान लिया कि शत्रुपक्ष में रावण का छोटा भाई विभीषण अत्यंत नम्र, विवेकशील और राम के प्रति अपार आदरभाव रखनेवाला है। शत्रुपक्ष के विषय में इस तरह की गुप्त जानकारी युद्धकाल में अत्यंत ही उपयोगी सिद्ध होती है। युद्ध सम्बन्धी व्यूह- रचना के निर्णायक क्षणों में इस तरह की महत्वपूर्ण जानकारी की एक अहम भूमिका होती है।

रामदूत हनुमान सीता की खोज के साथ अन्य कई आवश्यक कामों को पूरा करके लंका से प्रस्थान करना चाहते थे। सौंपे गए दायित्व को पूरा करने की दृष्टि से ऐसी भरपूर कर्तव्यनिष्ठा आज भी अगर कहीं प्रकट होती दिखाई देती है, उसमें हनुमानत्व की झलक प्राप्त होना ही मानना चाहिए। रामत्व तक पहुँचने के लिए मनुष्य को, कर्तव्यनिष्ठ हनुमानत्व को प्राप्त करना अनिवार्य होता है। लोग हनुमान की पूजा तो करते हैं, परंतु उनमें अपने को सौंपे गए कार्य को राम का कार्य मानकर उसे पूरा करने की निष्ठा का अभाव होता है। हमारी सामाजिक अवनति के मूल में कर्तव्य परायणता का अभाव ही उत्तरदायी रहा है।

अशोक वाटिका में सीता शोकमग्न थीं। उनके चारों ओर विकराल राक्षसियाँ पहरेदारी कर रही हैं और सीता को सतत भयभीत किए हुए हैं। वह सब उनके मनोबल को तोड़ने का प्रयास करती हैं ताकि वह स्वयं को रावण को समर्पित कर दें। एक अकेली त्रिजटा ही है, जो उस घनघोर विपत्ति की दशा में भी सीता के मन में आशा की लौ जलाए रखती है। अशोकवाटिका में त्रिजटा की भूमिका महत्वपूर्ण है या कह सकते हैं कि सीता के आत्मबल को बनाये रखने में, उनके जीवन रक्षण में त्रिजटा की भूमिका अवर्णनीय है। उस वियावन में त्रिजटा का एक-एक संवाद सीता के अंधियारे जीवन में उजाले की स्वर्णिम किरणों के समान है। त्रिजटा आसुरी सम्पदा के विकराल हाहाकार के बीच उठी दैवी सम्पदा की मंजुल-मंगल ध्वनि है।

गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में-

"त्रिजटा नाम राच्छसी एका। राम चरन रति निपुन बिबेका।

सबन्हौ बोली सुनाएसी सपना। सीतहि सेइ करहु हित-अपना।।" क

(रामचरितमानस सुंदर कांड)

रामायण में विलक्षण ,विरल पात्र जगह-जगह संकेत रूप में ही सही लेकिन अपने अमित सौंदर्य की छटा बिखेर जाते हैं। "अत्यंत विषम परिस्थिति से घिर चुके व्यक्ति को गुप्तरूप से हर संभव सहायता पहुँचाने की सद्वृत्ति का नाम ही त्रिजटा है।" जहाँ-जहाँ भी रावण की लंका होती है, वहाँ-वहाँ कोई विभीषण और त्रिजटा मिल ही जाते हैं। जब अत्याचारों का पहाड़ टूट पड़ा हो और जीवन जीना दूभर हो गया हो, ऐसे में जब कोई अप्रत्याशित सहायता प्रदान करने वाला व्यक्ति मिल जाए तो सहज ही त्रिजटा को स्मरण किया जा सकता है। सीता के लिए तो दग्ध करने वाली अग्निज्वालाओं के बीच त्रिजटा एक शीतल छाँव की तरह थी। त्रिजटा अर्थात् सार्थक जीवन जीने वाली, सामान्य में भी असामान्य लगने वाली एक राक्षसी। सचमुच ऐसा व्यक्तित्व नमन का अधिकारी है।

रावण द्वारा दिए गए दंड का अमलीकरण हुआ। सब कुछ पवनपुत्र की इच्छानुसार ही हो रहा था। रावण की आज्ञा से राक्षसों ने हनुमान की पूंछ पर जीर्ण सूती कपड़े लपेटकर, उस पर तेल छिड़क कर आग लगा दी। पूंछ में आग लगते ही पवनपुत्र का रोष अपनी सीमाएँ छोड़ देता है और उनका चेहरा प्रातः कालीन सूर्य की भाँति लाल सुर्ख हो जाता है।फिर तो वेगवान और बलवान हनुमान अत्यंत रौद्र रूप धारण कर एक के बाद एक भवनों और अटारियों पर चढ़कर उन्हें भस्मीभूत करने लगे। हर ओर आग ही आग थी। सम्पूर्ण लंका धू-धू कर जलने लगी।

"तेषु तेषु महार्हेषु भवनेषु महाशयाः।

गृहेष्वृद्धिमतामृद्धिं ददाह कपिकुंजर।।" म ;वाल्मीकि रामायण)

सभी व्याकुल होकर आर्तनाद करने लगे। सिर्फ विभीषण का महल बचा रह गया। इस प्रकार समग्र लंकापुरी को पीड़ित करके वानर शिरोमणि हनुमान ने समुद्र के जल में अपनी पूंछ की आग बुझायी।

वाल्मीकि जी ने लंका दहन प्रसंग में पवनपुत्र के प्रति जनकनंदिनी की चिंता और जनकनंदिनी के प्रति पवनपुत्र की चिंता को आंतरिक संवादों के माध्यम से बहुत ही संवेदनशील बना दिया है। हनुमान की पूँछ में आग लगाने की बात सुनकर सीता को हनुमान की चिंता होती है और जब लंका दहन का प्रचंड रूप सामने आया तो, हनुमान को सीता की चिंता होती है। दोनों के इस परस्परिक चिंता में विद्यमान स्नेह तत्व अत्यंत ही सुंदर एवं आकर्षक रूप में सामने आया है।

जब सीता को यह पता चला कि हनुमान को रावण के दरबार से निकाले जाने के बाद उनकी पूंछ में आग लगा दी गयी है, तो उनकी चिंता की सीमा नहीं रही। उन्होंने अग्नि देव से प्रार्थना करते हुए कहा- "हे देव! यदि मैंने अपने पति की सेवा की हो तथा मुझमें तपस्या और पतिपरायणता का कोई पुण्य या बल हो तो आप हनुमान के लिए शीतल बने रहें। ऐसी ही प्रार्थना सीता द्वारा वायुदेव से भी की गयी। तभी तो हनुमान जी को आश्चर्य होता है, सोचते हैं कि पूँछ दहक रही है, फिर भी किसी तरह की पीड़ा क्यों नहीं हो रही है?

जब सारी लंका धू-धू करके जल रही हो, ऐसे में पवनपुत्र को यह चिंता होना स्वाभाविक है। चिंता ही चिंता में हनुमान स्वयं ही एक तरह के अपराध बोध के शिकार होने लगे। उन्हें इस बात का पश्चाताप होने लगा कि वे अपने क्रोध पर नियंत्रण नहीं रख सके। वे मन ही मन सोचते हैं कि "लंका का कोई क्षेत्र शेष बचा नहीं है जहाँ आग ना लगी हो। ऐसे में माँ जानकी भी अवश्य भस्मीभूत हो गई होंगी। जिस कार्य सिद्धि के लिए इतना सारा परिश्रम किया, आज उन सब पर पानी फिर गया लगता है। अगर मैं सीता की रक्षा नहीं कर सका तो जीते जी कौन सा मुँह लेकर राम के पास जाऊँगा? हाँ, इतना अवश्य है कि तपस्या, सत्यव्रत एवं पतिपरायणता के प्रभाव से आर्या सीता अग्नि को जला सकती हैं, लेकिन अग्नि सीता को नहीं जला सकती है। हनुमान सीता को लेकर यही सब सोच रहे थे कि इतने में उनके कानों में किसी महात्मा के समान चारणों के शब्द टकराये

(शुश्राव हनुमान्स्तत्र चारणानाम् महात्मनाम्) ि

(वाल्मीकि रामायण सुंदर काण्ड 55·29)

पूरी लंका भस्म हो गई फिर भी सीता को किंचित आँच नहीं आयी। यह सुन पवनपुत्र के हर्ष का कोई पार न रहा। उनका हृदय उल्लास से भर गया। वे माता सीता से मिलकर लंका से विदा होना चाहते थे। उन्होंने अशोक वाटिका की ओर अपना रुख किया। यहाँ पुत्र स्वरूप पवनपुत्र और मातृ स्वरूपा सीता की पावनचिंता का मिलन हो रहा है। विदेहनन्दिनी के दर्शन होते ही पवनपुत्र की बेचैनी दूर हुई। इधर सीता के भी जी में जी आया। जब पवनपुत्र ने माता सीता से लंका से विदा होने की बात कही तो सीता उदास हो जाती हैं। सीता कुछ दिन और रुक जाने का आग्रह करती हुई कहती हैं--

"हे वीर! मुझ पर एक-पर-एक दुख के पहाड़ टूटते ही रहे हैं। इन दुखों से व्यथित मैं तुम्हारे चले जाने की बात से और भी घबड़ा रही हूँ।

जबसे पवनपुत्र जनकनंदिनी से मिले थे तबसे उन्हें नया जीवन मिल गया था। सीता जब हर तरह से हारकर निराश हो चुकी थीं, ऐसे में पवनपुत्र ने लंका पहुँचकर उनमें नयी आशा का संचार किया था। माता सीता वैसे भी विषम परिस्थितियों में बड़ी मुश्किल से जी रही थी। ऐसे में वहाँ से हनुमान जी का विदा होना, उन्हें और भी डरा रहा था। इसपर विदेहनन्दिनी को ढाँढस बँधाते हुए पवनपुत्र कहते हैं - "आप थोड़ा धीरज रखें। राक्षसराज रावण को शीघ्र ही काल के गाल में सौंप कर, श्रीराम आपको अयोध्या ले जाएँगे।"

अंत में पवनपुत्र ने माता सीता से राम को देने के लिए कोई निशानी माँगी तो उन्होंने अपनी चूड़ामणि उतार कर उन्हें सौंप दिया-

" मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा। जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा।

चूड़ामनि उतारि तव दयउ। हरष समेत पवनसुत लयऊ ।। ह ;रामचरितमानस सुंदरकाण्ड)

चूड़ामणि लेकर पवनपुत्र तेजी से अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान करते हैं। वहाँ पहुँचकर जब वे श्रीराम से मिलते हैं तो उनके मन में राम कार्य को पूरा करने का परम संतोष उमड़ रहा था। वे अपने लंका पहुँचने से लेकर वहाँ से लौटने तक की सारी घटनाओं का ब्यौरा सुनाकर राम को प्रसन्नता प्रदान करते हैं। अंत में अपनी ओर से सीता का संदेश सुनाते हुए वे राम से कहते हैं--

" हे निष्पाप रघुनंदन! संकट के समय इस चूड़ामणि को देखकर मैं उसी प्रकार आनन्दमग्न हो जाती थी, जैसे आपके दर्शन से आनंदित होती हूँ।" साथ में सीता जी ने यह भी कहा- " हे दशरथकुमार ! मैं अब एक महीना ही जीवित रह पाऊँगी। उसके बाद राक्षसों के हाथों मेरे प्राण शेष नहीं रहेंगें।"

इतना कहकर हनुमान ने सीता की दी गई निशानी ,चूड़ामणि राम के हाथ में रख दिया। राम उसे अपने हृदय से लगाकर बात करने लगे।

राम सत्यप्रतिज्ञ महामानव हैं। पिता का वचन पालन करने के लिए अयोध्या का राज्य त्याग कर चौदह वर्ष के वनवास निमित्त प्रस्थान करते समय राम की आँखों में आँसू नहीं आए। उन्हीं राम को यहाँ सीता विरह में आँसू बहाते हुए देखते हैं। सत्य महान होता है सही है, किंतु क्या संवेदनशून्य सत्य मानव को शोभा दे सकता है?

प्राणप्यारी सीता के द्वारा प्रेषित निशानी प्राप्त करने पर स्वयं सीता से मिलने की अनुभूति तो अवश्य होती है, परंतु यथार्थ स्थिति तो यह कि सीता अत्यंत क्रूर एवं पापी राक्षस रावण की कैद में है। हनुमान सीता का पता लगा कर लौटे हैं, यह ठीक है किंतु रावण को पराभूत कर, जैसे भी हो सीता को पुनः वापस लाने का महत कार्य अभी शेष था। अपने महाकाव्य में वाल्मीकि जी ने संवेदना और शील के समन्वय से सुशोभित विरल क्षणों का सर्जन किया है। ये ऐसे पावन क्षण हैं, जिनके प्रभाव से धरती की धूल में मानवता ऊँचाई प्राप्त कर धन्यता का अनुभव करती है।

राम को इस चूड़ामणि में सीता के प्राप्त होने की अनुभूति होती है। वे हनुमान से कहते हैं--

"हे सौम्य! जिस प्रकार बेहोश व्यक्ति को होश में लाने के लिए पानी के छींटे डाले जाते हैं उसी प्रकार सीता के वियोग से मूर्छित हुए श्रीराम को अपने वाक्यरूपी शीतल जल से सींचने के लिए सीता ने जो जो कहा हो ,उसे बार-बार मुझे सुनाओ। हनुमान की सारी बातें राम के लिए चंदन की तरह सिद्ध हुईं। दीर्घ विरह भोगने के बाद सीता का संदेश एवं चूड़ामणि प्राप्त होना, वीराने में अमृत प्राप्त होने की तरह है। हनुमान की बातें सुनकर राम को बड़ी राहत मिली, क्योंकि हृदय को बेधने वाली अनिश्चितता का अंत आ गया था। राम को इतना आश्वासन तो मिला ही कि सीता जीवित हैं और वह भयानक राक्षसों के बीच राम के विरह में जी रही हैं। वह व्याकुलता से मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं।

इस समय राम के रोम-रोम से एक ही ध्वनि उठ रही है -

सीता, सीता·····।

हनुमान से उनके पराक्रम का सारा वृत्तांत सुनकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती है और उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए वे कहते हैं -

"सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं। देखेउँ करि विचार मनमाहीं।।

पुनि पुनि कपिहिं चितव सुरत्राता। लोचन नीर पुलक अति गाता।।

(रामचरितमानस सुंदरकांड)

यह कहते-कहते राम की आँखें भर आती हैं और शरीर पुलकायमान हो जाता है।

राम के इस कथन पर पवनपुत्र कहते हैं -

"सो सब तव प्रताप रघुराई ।नाथ न कछु मोरि प्रभुताई।।

(रामचरितमानस सुंदरकांड)

हनुमान जी के इस उत्तर में उनके चरित्र का आभिजात्य व्यक्त हो रहा है। क्योंकि इसमें अभिमान का लेशमात्र नहीं है। अपने सारे पराक्रम का यश राम के श्रीचरणों में रख देना सामान्य बात नहीं है।

सचमुच रामायण में हनुमान के चरित्र की यह सुषमा महाकाव्य को विराट गौरव प्रदान करती है। हनुमान जी वानरश्रेष्ठ हैं और श्रीराम नरश्रेष्ठ । रामभक्त द्वारा जो भी पराक्रम किया जाता है वह श्रीराम के चरणों में समर्पित करके पवनपुत्र अहंकार मुक्त हो जाते हैं और अपने निश्छल हृदय का परिचय देते हैं।

"हरि अनंत हरि कथा अनन्ता।"

हरि का अर्थ 'वानर भी होता है। पवनपुत्र को हृश्वर अर्थात वानरश्रेष्ठ भी कहा गया है। जहाँ नरोत्तम राम हरि की उपस्थिति है , वहाँ वानरोत्तम हनुमान (हरि) भी उपस्थित होते ही हैं। नर और वानर के बीच का यह काव्यमय सेतु सुंदरकांड में निर्मित हुआ है।

पवनपुत्र राम से कृतज्ञतापूर्वक प्रार्थना करते हुए उनसे अविचल भक्ति माँगते हैं -

"नाथ भगति अति सुखदायनी। देह कृपा करि अनपायनी।।" (रामचरितमानस सुंदरकांड)

प्रत्येक कार्य जहाँ प्रभु-प्रीत्यर्थ होता है वहाँ कर्म की कविता के सृजन की पूरी संभावना रहती है।

सुंदरकांड को रामायण का सबसे उत्तम अंश माना जाता है। सुंदर काण्ड का रहस्य पराक्रम, प्रेम एवं प्रतीति इन तीन शब्दों में प्रतीत होता है। सुंदरकांड में हनुमान का पराक्रम सामने आया। उनकी प्राणशक्ति का प्रकटीकरण उनके इस अतुलनीय पराक्रम के माध्यम से हुआ है। समुद्र को पार करने के लिए जिस प्रचंड संकल्पशक्ति की आवश्यकता थी, वह हनुमान के अलावा किसी अन्य वानर में नहीं थी, इसलिए जामवंत ने चतुराईपूर्वक अंगद को समझाकर, पवनपुत्र का चयन किया। यदि पराक्रम के साथ समय पर योग्य निर्णय लेने की शक्ति आपके पास नहीं है तो काम बिगड़ जाने की पूरी संभावना रहती है। लंका पहुँचने पर हनुमान अनेक राक्षसों का संहार करते हैं लेकिन मेघनाद के सामने आते ही खुद को पकड़वा देते हैं और रावण की सभा में जाकर उनसे बात भी करते हैं। शत्रु की शक्ति का अनुमान लगाना था इसलिए ऐसा करना आवश्यक था। रावण का दरबार छोड़ने के बाद हनुमान लंका दहन करते हैं। इसके बाद वे सीता से मिलकर निशानी के रूप में राम के लिए चूड़ामणि ले जाते हैं।

सुंदरकाण्ड वस्तुतः 'हनुमानकाण्ड' है। इसके पहले श्लोक में ही वाल्मीकि हनुमान को शत्रुकर्षन कहकर उनका स्वागत करते हैं। उस युग में शत्रु-संहार पराक्रम की माँग करता था। इस पराक्रम में हिंसा - अहिंसा का विचार नहीं होता था। वीरता के साथ शत्रु-विनाश का भाव स्वयमेव जुड़ जाया करता था और फिर यदि शत्रु अधर्म में रचा-पचा है तो फिर तो उसका विनाश ही धर्म हो जाता है। इसलिए लंकाकांड में हनुमान द्वारा किया गया राक्षस-वध एवं लंका-दहन पराक्रम माना गया। सामने का शत्रुपक्ष अधर्म का पक्षपाती था। ऐसे में उसका नाश करने के लिए जो कुछ भी करना पड़ा था उस सब का शुमार धर्म में किया गया है।

सुंदरकांड की सुंदरता के रहस्य का दूसरा पहलू है प्रेम। पंचवटी में पोषित-पल्लवित राम-सीता की एकात्मकता रावण के कारण खंडित होती है। सुंदरकांड में वियोगिनी सीता का शीलवैभव तथा उनके विरह में प्रतिपल बिसूरते राम का भाववैभव हमारे हृदय को भी भिगोये बिना नहीं रह पाता।

राम जब पवनपुत्र से पूछते हैं कि सीता किस स्थिति में है और वह किस प्रकार प्राणों की रक्षा कर रही है*?* इस संदर्भ में जो पवनपुत्र का उत्तर है वह उनके विवेक एवं ज्ञान का परिचायक है। वे कहते हैं-

"राम-नाम वहाँ रात-दिन पहरेदारी करता है, आपका निरन्तर ध्यान ही वहाँ किवाड़ है तथा आँखें हमेशा आपके चरणों में निरत रहती हैं, यही वह ताला है, तब प्राणों के जाने के लिए रास्ता ही कहाँ है*??*

प्रतीति 'सुंदरकांड' की सुंदरता का तीसरा पहलू है। लम्बे विरह काल के बाद हनुमान सीता को राम का समाचार देते हैं और सीता का संदेश राम को पहुँचाते हैं। विरह की वेदना जितनी तीव्र होती है उससे उपजी प्रतीक्षा भी उतनी ही तीव्र होगी। लंबी प्रतीक्षा के बाद जब प्रियजन के प्रेम की प्रतीति होती है, तब एक ऐसा क्षण आता है जो ' तीर्थक्षण ' में रूपायित हो जाता है। इसी तरह हनुमान राम के हाथ में सीता का दिया हुआ स्मृतिचिह्न सौंपते हैं, तब भी एक दूसरे 'तीर्थक्षण' की निर्मिति होती है। दोनों ओर इन अलौकिक क्षणों में 'अश्रुतीर्थ' का सर्जन सहज अस्तित्व में आ जाता है। तब ऐसा लगता है कि 'सुंदरकांड' की सुंदरता का रहस्य विरहभक्ति के साथ-साथ प्राप्त होने वाली इस पावन प्रतीति में कहीं न कहीं गोपित है। सुंदरकांड एक प्रकार से "विश्वासकाण्ड" भी है, क्योंकि यहाँ विश्वास का एक अटूट बंधन है ।भक्त का भगवान के प्रति, भगवान का भक्त के प्रति, पत्नी का पति के प्रति और पति का पत्नी के प्रति, एक स्वामी का सेवक के प्रति,सेवक का स्वामी के प्रति।

सुंदरकांड में हम हनुमान के विभूतिमत्व से भी परिचित होते हैं। सुंदरकांड में हनुमान की राम के प्रति अभिचारिणी भक्ति का सौंदर्य व्यक्त होता दिख पड़ता है। इस सौंदर्य को प्राप्त करने के लिए हमें भी अपने में निहित आंतरिक सौंदर्य को जगाना चाहिए। सुंदरकांड का संदेश यही है - "जो सत्य होता है वही शिवस्वरुप *(*कल्याणकारी*)* हो सकता है और जहाँ सत्य और शिव होता है वही सुंदर हो सकता है।" इसलिए सुंदरकाण्ड समग्र रूप में सुंदर है। वाल्मीकि जी ने पूरे रामायण की संवाद योजना को अद्‌भुत कौशल से गढ़ा है।

संदर्भ ग्रंथ:-

ंण ;रामचरित मानस)

इण ;वाल्मीकि रामायण, लंका काण्ड

.. 34ण्2

बण ;वाल्मीकि रामायण, लंका काण्ड

. 37ण्22द्ध

कण ;रामचरितमानस सुंदर कांड)

मण ;वाल्मीकि रामायण सुंदर कांड)

ण्ि ;वाल्मीकि रामायण सुंदर काण्ड

.55ण्29

हण ;रामचरितमानस सुंदरकाण्ड)

ीण ;रामचरितमानस सुंदरकाण्ड)

पण ;रामचरितमानस सुंदरकाण्ड)

श्रण रामचरितमानस सुंदरकाण्ड)

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण- बालकाण्ड उनचासवां सर्ग। *(1,2)*

अध्यात्म रामायण- बालकाण्ड *(3,5)*

रामचरितमानस- बालकाण्ड *(4)*

रामायण: मानवता का महाकाव्य

- गुणवंत शाह